प्र० सं० १०००० सं० १९८५
द्वि० सं० ५००० सं० १९८६
तृ० सं० ५००० सं० १९८७
च० सं० ५००० सं० १९८९
पं० सं० ५००० सं० १९९०
ष० सं० ८००० सं० १९९१
स० सं० ८००० सं० १९९२
अ० सं० १०००० सं० १९९४
न० सं० ९००० सं० १९९६

कुल ६५०००

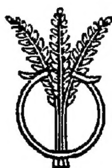
मुद्रक तथा प्रकाशक—
घनश्यामदास जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीहरिः

वक्तव्य

श्रीस्वामी शङ्कराचार्यजीकी प्रश्नोत्तर-मणि-माला बहुत ही उपादेय पुस्तिका है। इसके प्रत्येक प्रश्न और उत्तरपर मननपूर्वक विचार करना आवश्यक है। संसारमें स्त्री, धन और पुत्रादि पदार्थोंके कारण ही मनुष्य विशेषरूपसे बन्धनमें रहता है, इन पदार्थोंसे वैराग्य होनेमें ही कल्याण है, यही समझकर उन्होंने स्त्री, धन और पुत्रादिकी निन्दा की है। स्त्रीके लिये विशेष जोर देनेका कारण भी स्पष्ट है। धन, पुत्रादि छोड़नेवाले भी प्रायः स्त्रियोंमें आसक्त देखे जाते हैं, वास्तवमें यह दोष स्त्रियोंका नहीं है, यह दोष तो पुरुषोंके बिगड़े हुए मनका है परन्तु मन बड़ा चञ्चल है इसलिये संन्यासियोंको तो स्त्रियोंसे

हर तरहसे अलग ही रहना चाहिये। जान पड़ता है कि यह पुस्तिका खासकर संन्यासियोंके लिये ही लिखी गयी थी। इसमें बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो सभीके कामकी हैं। अतः उनसे हमलोगोंको पूरा लाभ उठाना चाहिये। स्त्री, पुत्र, धन आदि संसारके सभी पदार्थोंसे यथा-साध्य ममताका त्याग करना आवश्यक है।



श्रीपरमात्मने नमः

प्रश्नोत्तरी

अपारसंसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ॥१॥

प्रश्न	उत्तर
हे दयामय गुरुदेव! कृपा करके यह बताइये कि अपार संसाररूपी समुद्रमें मुझ डूबते हुएका आश्रय क्या है?	विश्वपति परमात्माके चरणकमलरूपी जहाज।

बद्धो हि को यो विषयानुरागी
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः ।

को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः
तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति ।२।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें बँधा कौन है ?	विषयोंमें आसक्त ।
विमुक्ति क्या है ?	विषयोंसे वैराग्य ।
घोर नरक क्या है ?	अपना शरीर ।
स्वर्गका पद क्या है ?	तृष्णाका नाश होना।

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः
को मोक्षहेतुः कथितः स एव ।
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी
का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ।३।

प्रश्न	उत्तर
संसारको हरनेवाला कौन है ?	वेदसे उत्पन्न आत्मज्ञान।
मोक्षका कारण क्या कहा गया है ?	वही आत्मज्ञान ।

नरकका प्रधान द्वार क्या है ?	नारी ।
स्वर्गको देनेवाली क्या है ?	जीवमात्रकी अहिंसा ।

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी ।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि
तान्येव मित्राणि जितानि यानि ।४।

प्रश्न	उत्तर
(वास्तवमें) सुखसे कौन सोता है ?	जो परमात्माके स्वरूपमें स्थित है ।
और कौन जागता है ?	सत् और असत्के तत्त्वका जाननेवाला ।
शत्रु कौन हैं ?	अपनी इन्द्रियाँ । परन्तु जो जीती हुई हों तो वही मित्र हैं ।

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः ।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः
किं वामृतं स्यात्सुखदा निराशा ।५।

प्रश्न	उत्तर
दरिद्र कौन है ?	भारी तृष्णावाला ।
और धनवान् कौन है ?	जिसेसबतरहसेसन्तोषहै ।
(वास्तवमें) जीते जी मरा कौन है ?	जो पुरुषार्थहीन है ।
और अमृत क्या हो सकता है ?	सुख देनेवाली निराशा । (आशासे रहित होना।)

पाशो हि को यो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री ।
को वा महान्धो मदनातुरो यो
मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम् ।६।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें फाँसी क्या है ?	जो 'मै' और 'मेरा' पन है।
मदिराकी तरह क्या चीज निश्चय ही मोहित कर देती है ?	नारी ही ।
और बड़ा भारी अन्धा कौन है ?	जो कामवश व्याकुल है।
मृत्यु क्या है ?	अपनी अपकीर्ति ।

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव ।
को दीर्घरोगो भव एव साधो
किमौषधं तस्य विचार एव ।७।

प्रश्न	उत्तर
गुरु कौन है ?	जो केवल हितका ही उपदेश करनेवाला है ।
शिष्य कौन है ?	जो गुरुका भक्त है, वही ।

बड़ा भारी रोग क्या है ?	हे साधो ! बार-बार जन्म लेना ही ।
उसकी दवा क्या है ?	परमात्माके स्वरूपका मनन ही ।

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं
तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम् ।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ।८।

प्रश्न	उत्तर
भूषणोंमें उत्तम भूषण क्या है ?	उत्तम चरित्र ।
सबसे उत्तम तीर्थ क्या है?	अपना मन जो विशेषरूपसे शुद्ध किया हुआ हो।
इस संसारमें त्यागने योग्य क्या है ?	काञ्चन और कामिनी ।
सदा (मन लगाकर) सुनने योग्य क्या हैं ?	वेद और गुरुका वचन ।

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति
सत्सङ्गतिर्दानविचारतोषाः ।
के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा
अपास्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः ।६।

प्रश्न	उत्तर
परमात्माकी प्राप्तिके क्या-क्या साधन हैं ?	सत्सङ्ग, सात्त्विक दान, परमेश्वरके स्वरूपका मनन और सन्तोष ।
महात्मा कौन हैं ?	संपूर्ण संसारसे जिनकी आसक्ति नष्ट हो गयी है, जिनका अज्ञान नाश हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्म-तत्त्वमें स्थित हैं ।

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः ।

कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ।१०।

प्रश्न	उत्तर
प्राणियोंके लिये वास्तवमें ज्वर क्या है ?	चिन्ता ।
मूर्ख कौन है ?	जो विचारहीन है ।
करने योग्य प्यारी क्रिया क्या है ?	शिव और विष्णुकी भक्ति।
वास्तवमें जीवन कौन-सा है ?	जो सर्वथा निर्दोष है ।

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः ।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै
जितं जगत्केन मनो हि येन ।११।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें विद्या कौन-सी है ?	जो परमात्माको प्राप्त करा देनेवाली है ।

वास्तविक ज्ञान क्या है ?	जो (यथार्थ) मुक्तिका कारण है ।
यथार्थ लाभ क्या है ?	जो परमात्माकी प्राप्ति है, वही ।
जगत्को किसने जीता ?	जिसने मनको जीता ।

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु ।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ।१२।

प्रश्न	उत्तर
वीरोंमें सबसे बड़ा वीर कौन है ?	जो कामबाणोंसे पीड़ित नहीं होता ।
बुद्धिमान्, समदर्शी और धीर पुरुष कौन है ?	जो स्त्रियोंके कटाक्षोंसे मोहको प्राप्त न हो ।

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता
दुःखी सदा को विषयानुरागी ।

धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी
कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः ।१३।

प्रश्न	उत्तर
विषसे भी भारी विष कौन है ?	सारे विषयभोग ।
सदा दुःखी कौन है ?	जो संसारके भोगोंमें आसक्त है ।
और धन्य कौन है ?	जो परोपकारी है ।
पूजनीय कौन है ?	कल्याणरूप परमात्म-तत्त्वमें स्थित महात्मा ।

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्यं
किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात् ।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता ।१४।

प्रश्न	उत्तर
सभी अवस्थाओंमें विद्वानोंको बड़े जतनसे क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये?	संसारसे स्नेह और पाप नहीं करना तथा सद्-ग्रन्थोंका पठन और धर्मका पालन करना चाहिये।
संसारकी जड़ क्या है ?	(उसका) चिन्तन ही।

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा
नार्या पिशाच्या न च वञ्चितो यः।
का शृङ्खला प्राणभृतां हि नारी
दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम्॥१५॥

प्रश्न	उत्तर
समझदारोंमें सबसे अच्छा समझदार कौन है ?	जो स्त्रीरूप पिशाचिनी-से नहीं ठगा गया है।
प्राणियोंके लिये साँकल क्या है ?	नारी ही।
श्रेष्ठ व्रत क्या है ?	पूर्णरूपसे विनयभाव।

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वै-

र्योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम् ।

का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा

विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा ।१६।

प्रश्न	उत्तर
सब किसीके लिये क्या जानना सम्भव नहीं है ?	स्त्रीका मन और उसका चरित्र ।
सब लोगोंके लिये क्या त्यागना अत्यन्त कठिनहै?	बुरी वासना (विषयभोग और पापकी इच्छाएँ) ।
पशु कौन है ?	जो सद्विद्यासे रहित (मूर्ख) है ।

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो

मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः ।

मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयं
सत्सङ्गतिर्निर्ममतेशभक्तिः ।१७।

प्रश्न	उत्तर
किन-किनके साथ निवास और संग नहीं करना चाहिये ?	मूर्ख, नीच, दुष्ट और पापियोंके साथ।
मुक्ति चाहनेवालोंको तुरन्त क्या करना चाहिये?	सत्संग, ममताका त्याग और परमेश्वरकी भक्ति।

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव
गुरुत्वमूलं यदयाचनं च ।
जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म
को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः ।१८।

प्रश्न	उत्तर
छोटेपनकी जड़ क्या है?	याचना ही।
बड़प्पनकी जड़ क्या है?	कुछ भी न माँगना।

किसका जन्म सराहनीय है ?	जिसका फिर जन्म न हो ।
किसकी मृत्यु सराहनीय है ?	जिसकी फिर मृत्यु नहीं होती ।

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः ।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी ।१६।

प्रश्न	उत्तर
गूँगा कौन है ?	जो समयपर उचित वचन कहनेमें समर्थ नहीं है ।
और बहिरा कौन है ?	जो यथार्थ और हितकर वचन नहीं सुनता ।
विश्वासके योग्य कौन नहीं है ?	नारी ।

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयं
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्य-
ग्देयं परं किं त्वभयं सदैव ।२०।

प्रश्न	उत्तर
एक तत्त्व क्या है ?	अद्वितीय कल्याण-तत्त्व (परमात्मा) ।
सबसे उत्तम क्या है ?	जो उत्तम आचरण है।
कौन-सा सुख तज देना चाहिये ?	सब प्रकारसे स्त्रीका सुख ही।
देने योग्य उत्तम दान क्या है ?	सदा अभय ही ।

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा
कामः सकोपानृतलोभतृष्णः ।
न पूर्यते को विषयैः स एव
किं दुःखमूलं ममताभिधानम्।२१।

प्रश्न	उत्तर
शत्रुओंमें सबसे बड़ा भारी शत्रु कौन है ?	क्रोध, झूठ, लोभ और तृष्णासहित काम ।
विषयभोगोंसे कौन तृप्त नहीं होता ?	वही काम ।
दुःखकी जड़ क्या है ?	ममता नामक दोष ।

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य
-सत्यं च किं भूतहितं सदैव ।
किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् ।२२।

प्रश्न	उत्तर
मुखका भूषण क्या है ?	विद्वत्ता ।
सच्चा कर्म क्या है ?	सदा ही प्राणियोंका हित करना ।
कौन-सा कर्म करके पछताना नहीं पड़ता ?	भगवान् शिव और श्री-कृष्णका पूजनरूप कर्म।

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः
क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव
के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः ।२३।

प्रश्न	उत्तर
किसके नाशमें मोक्ष है?	मनके ही ।
किसमेंसर्वथा भय नहीं है?	मोक्षमें ।
सबसे अधिक चुभनेवाली कौन चीज है ?	अपनी मूर्खता ही ।
उपासनाके योग्य कौन-कौन हैं ?	देवता, गुरु और वृद्ध ।

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात्।
वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च ।२४।

प्रश्न	उत्तर
प्राण हरनेवाले कालके उपस्थित होनेपर अच्छी बुद्धिवालोंको बड़े जतन-से तुरन्त क्या करना उचित है ?	सुख देनेवाले और मृत्युका नाश करनेवाले भगवान् मुरारिके चरणकमलोंका तन, मन, वचनसे चिन्तन करना ।

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः ।
मातेव का या सुखदा सुविद्या
किमेधते दानवशात्सुविद्या ।२५।

प्रश्न	उत्तर
डाकू कौन हैं ?	बुरी वासनाएँ ।
सभामें शोभा कौन पाता है ?	जो अच्छा विद्वान् है ।
माताके समान सुख देने-वाली कौन है ?	उत्तम विद्या ।
देनेसे क्या बढ़ती है ?	अच्छी विद्या ।

कुतो हि भीतिः सततं विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च के वा
विपत्सहायः परिपालका ये ।२६।

प्रश्न	उत्तर
निरन्तर किससे डरना चाहिये ?	लोक-निन्दासे और संसाररूपी वनसे ।
अत्यन्त प्यारा बन्धु कौन है ?	जो विपत्तिमें सहायता करे ।
और पिता कौन हैं ?	जो सब प्रकारसे पालन-पोषण करें ।

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-
त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे ।२७।

प्रश्न	उत्तर
क्या समझनेके बाद कुछ भी समझना बाकी नहीं रहता ?	शुद्ध, विज्ञान, आनन्दघन कल्याणरूप परमात्माको।
किसको जान लेनेपर (वास्तवमें) जगत् जाना जाता है ?	सर्वात्मरूप परिपूर्ण ब्रह्म-के स्वरूपको ।

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्सङ्गतिर्ब्रह्मविचारणा च ।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः ।२८।

प्रश्न	उत्तर
संसारमें दुर्लभ क्या है ?	सद्गुरु, सत्सङ्ग, ब्रह्म-विचार, सर्वस्वका त्याग और कल्याणरूप परमात्माका ज्ञान ।

सबके लिये क्या जीतना कठिन है ?	कामदेव ।

पशोः पशुः को न करोति धर्मं
प्राधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः ।
किन्तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः ।२६।

प्रश्न	उत्तर
पशुओंसे भी बढ़कर पशु कौन है ?	शास्त्रका खूब अध्ययन करके जो धर्मका पालन नहीं करता और जिसे आत्मज्ञान नहीं हुआ ।
वह कौन-सा विष है जो अमृत-सा जान पड़ता है?	नारी ।
शत्रु कौन है जो मित्र-सा लगता है ?	पुत्र आदि ।

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-

र्दानं परं किञ्च सुपात्रदत्तम् ।

कण्ठङ्गतैरप्यसुभिर्न कार्यं

किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा ।२०।

प्रश्न	उत्तर
बिजलीकी तरह क्षणिक क्या है ?	धन, यौवन और आयु।
सबसे उत्तम दान कौन-सा है ?	जो सुपात्रको दिया जाय।
कण्ठगत प्राण होनेपर भी क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये ?	पाप नहीं करना चाहिये और कल्याणरूप परमात्माकी पूजा करनी चाहिये ।

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम् ।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
क्वास्था न कार्या सततं भवाब्धौ ।२१।

प्रश्न	उत्तर
रात-दिन विशेषरूपसे क्या चिन्तन करना चाहिये ?	संसारका मिथ्यापन और कल्याणरूप परमात्मा-का तत्त्व ।
वास्तवमें कर्म क्या है ?	जो भगवान् श्रीकृष्णको प्रिय हो ।
सदैव किसमें विश्वास नहीं करना चाहिये ?	संसार-समुद्रमें ।

कण्ठङ्गता वा श्रवणङ्गता वा
प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला ।

तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं
रमेशगौरीशकथेव सद्यः ।३२।

यह प्रश्नोत्तरनामकी मणिरत्नमाला कण्ठमें या कानोंमें जाते ही लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु और उमापति भगवान् शंकरकी कथाकी तरह विद्वानों-के सुन्दर आनन्दको बढ़ावे ।



कुछ प्राचीन शास्त्र

श्रीविष्णुपुराण-सटीक पृ० ५४८, चित्र ८, मू० २॥), बढ़िया २॥।)

अध्यात्मरामायण-सार्थ पृष्ठ४०२, चित्र८, १॥।), बढ़िया जिल्द २)

एकादश स्कन्ध-सानुवाद पृष्ठ ४२०, मू० ॥।) १)

विष्णुसहस्रनाम-शांकर-भाष्य, हिन्दी-अ० ॥=)

श्रुति-रत्नावली-श्रुतियोंका सार्थसंग्रह, पृ० २८४, ॥)

ईशावास्योपनिषद्- ≡)

केनोपनिषद्- मू० ॥)

कठोपनिषद्- ॥-)

मुण्डकोपनिषद्- ।≡)

प्रश्नोपनिषद्- ।≡)

माण्डूक्योपनिषद्- १)

तैत्तिरीयोपनिषद् ॥।-)

ऐतरेयोपनिषद् ।=)

उपनिषदोंके चौदह रत्न ।=)

प्रेम-दर्शन-पृ० २००, ।-)

मूलरामायण-मू० -)।

मनुस्मृति द्वितीय अध्याय सार्थ, मूल्य -)॥

विष्णुसहस्रनाम-मू०)॥।

श्रीरामगीता- मूल्य)॥।

सन्ध्या)॥

नारद-भक्ति-सूत्र)।

बलिवैश्वदेवविधि)॥

पातञ्जलयोगदर्शन)।

पता-गीताप्रेस, गोरखपुर

परमार्थ-ग्रन्थमालाकी कुछ मणियाँ

तत्त्व-चिन्तामणि (भाग १)-श्रीजयदयालजी गोयन्दका, पृष्ठ ३५०, मूल्य ॥=) सजिल्द ॥।-)

गुटका संस्करण-पृ० ४४८, मू० ।-) स० ।=)

तत्त्व-चिन्तामणि (भाग २)-श्रीगोयन्दकाजीके लेखोंका सचित्र संग्रह, पृ० ६३२, मू० ॥।=) स०१=)

गुटका संस्करण-पृष्ठ ७५०, मू० ।=) स० ॥)

तत्त्व-चिन्तामणि (भाग ३)-श्रीजयदयालजीगोयन्दका-के लेखोंका नया संग्रह मू० ॥≶) सजिल्द ॥।=)

गुटका संस्करण-पृष्ठ ५६०, मूल्य ।-)सजिल्द ।=)

मानव-धर्म-धर्मके दश प्रकारके भेद बड़ी सरल, सुबोध भाषामें उदाहरणोंसहित समझाये हैं । मू०≡)

साधन-पथ-इसमें साधन-पथके विघ्नों, उनके निवारणके उपायोंका वर्णन है, पृष्ठ ७२, मूल्य =)॥

तुलसीदल-सचित्र, श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके लेखोंका संग्रह, पृ० २९२, मू० ॥) स० ॥≡)

परमार्थ-पत्रावली-श्रीजयदयालजी गोयन्दकाके ५१ कल्याणकारी पत्रोंका संग्रह, पृ० १४४, मू० ।)

नैवेद्य-श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके कुछ और चुने हुए लेखोंका संग्रह, पृ० ३५०, मू० ॥)स० ॥≡)

ईश्वर-लेखक-श्रीमालवीयजी, पृष्ठ ३२, मूल्य -)।

पता-गीताप्रेस, गोरखपुर

